पाठ - 36

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

समय-समय पर भारत भूमि में कुछ ऐसी महान विभूतियाँ जन्म लेती रही हैं जिनकी विशिष्ट क्षमताओं तथा उर्वर विचारों से देश तथा समाज को नई दिशा प्राप्त होती रही है। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय क्षितिज पर ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व का उदय हुआ, जिन्हें हम

लोकनायक जयप्रकाश नारायण के रूप में जानते हैं।

जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार के सिताबदियारा गाँव में (वर्तमान उत्तर प्रदेश) 11 अक्टूबर, 1902 को हुआ। जयप्रकाश जी पिता हरसूदयाल एवं माता श्रीमती फूलरानी की योग्य संतान थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पटना के कालेजिएट स्कूल से हुई। आपने हाईस्कूल परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। आगे की शिक्षा के लिए इन्होंने पटना कालेज में प्रवेश लिया। जय प्रकाश बाबू विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने 1922 ई0 में उच्च शिक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। अमेरिका में ही वे माक्र्सवादी विचारों के प्रभाव में आए और सारी दुनिया के लिए माक्र्सवाद के विचारों का समर्थन किया।

जयप्रकाश नारायण एक कर्म योद्धा थे। उनमें बाल्यकाल से ही निडरता, नैतिक साहस, मैत्री, त्याग और देशवासियों के लिए अटूट प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। स्वदेश लौटने के बाद वे भारतीय राजनीति में सक्रिय हो गए। इन दिनों भारत में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन संचालित था। एक सच्चे राष्ट्रभक्त के रूप में वे स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ गए। अब तक जयप्रकाश जी पूरी तरह समाजवादी सिद्धान्तों से प्रभावित हो चुके थे। उनके तीव्र विरोध को देखते हुए अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के लिए वे जेल से भाग निकले किन्तु दुर्भाग्यवश 18 सितम्बर, 1943 को लाहौर रेलवे स्टेशन पर पुनः गिरतार कर लिए गए। वे अप्रैल 1946 को रिहा किए गए और पुनः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। गांधी जी जयप्रकाश को भारतीय समाज का सबसे बड़ा विद्वान मानते थे। गांधी जी ने 1946 में उनका नाम कांग्रेस अध्यक्ष के लिए प्रस्तावित किया किंतु कांग्रेस की कार्यकारिणी ने इसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने 1948 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस छोड़कर भारतीय समाजवादी पार्टी की स्थापना की।

जयप्रकाश जी के हृदय में अंत्योदय एवं सर्वोदय की विचारधारा व्यावहारिक जीवन में उतरने के लिए आतुर थी, इसी समय 1952 में ये आचार्य बिनोवा भावे के नेतृत्व में चलाए जा रहे सर्वोदय आंदोलन, भूदान आंदोलन की ओर आकर्षित हुए। वे सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र के आमूल परिवर्तन के पक्षधर थे। उन्होंने सरकार एवं सत्ता में कोई पद स्वीकार नहीं किया।

जयप्रकाश जी की दृष्टि में समाजवाद का उद्देश्य समाज का समन्वित विकास करना था। वह सक्रिय राजनीति से अवश्य दूर थे किंतु समाजवाद के सिद्धांतों के प्रति उनकी जागरूकता निरंतर बनी रही। 1974 और उसके बाद भी

अंत्योदय के प्रति उनके विचार निरंतर पुष्ट होते गए।

15 मार्च, 1977 को प्रेस के माध्यम से राष्ट्र के नाम संदेश में उन्होंने कहा था- 'मेरे सपनों के भारत में प्रत्येक जन, प्रत्येक साधन निर्बल की सेवा में समर्पित हैं जिसके लोग 'अंत्योदय' अर्थात सबसे निर्बल और निर्धनतम व्यक्ति के कल्याण में संलग्न हैं। मेरे सपनों के भारत में प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक आदमी के काम में हाथ बँटाता है, हाँ अधिकारी और जन-प्रतिनिधि जनता के सेवक हंै और यदि वे गलत रास्ते पर चलंे, तो जनता को उन्हें रोकने का अधिकार है। जहाँ किसी भी पदाधिकारी को कोई विशेषाधिकार नहीं बल्कि जनता द्वारा सौंपा गया विश्वास समझा जाता है। संक्षेप में मेरे सपनों का भारत एक स्वतंत्र, प्रगतिशील और गांधी जी के पद-चिह्नों पर चलने वाला भारत है।' लोकनायक जयप्रकाश के ये उद्गार सदैव हमारा पथ प्रदर्शन करते रहंेगे।

जयप्रकाश बाबू ने बताया कि समाजवाद भारतीयता का विरोधी नहीं है बल्कि भारतीय संस्कृति के मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए भी हम देश में समाजवाद ला सकते हैं क्योंकि भारतीय परंपराएँ कभी शोषणवादी नहीं रही हैं। अरण्यकालीन संस्कृति से ही भारत में विश्वबंधुत्व और सहयोग को सदैव सर्वोपरि सम्मान दिया जाता रहा है। वास्तव में भारतीय संस्कृति में सन्निहित आधारभूत आदर्शवाद वास्तविक समाजवाद है।

जयप्रकाश नारायण के समग्र जीवन दर्शन से स्पष्ट है कि वे 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' के वास्तविक पोषक थे। उनके विचार उनके उज्ज्वल इतिहास का यशोगान करते हैं। एक सर्वोदयी नेता के रूप में उनके कार्यकलाप देशोत्थान के लिए बहुमूल्य सिद्ध हुए हैं।

भारतीय राजनीति के विस्तृत आकाश का यह ज्वाजल्यमान नक्षत्र 8 अक्टूबर, 1979 को सदा सर्वदा के लिए अस्त हो गया। निश्चित रूप से वे आज हमारे बीच नहीं हैं पर उनके विचार, उनके सिद्धांत, भारतीय राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. जयप्रकाश नारायण का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. जयप्रकाश नारायण के माता-पिता का नाम बताइए।
3. गांधी जी ने समाजवाद का सबसे बड़ा विद्वान किसको माना ?
4. जयप्रकाश नारायण के राष्ट्रवाद पर क्या विचार थे ? वर्णन कीजिए।